Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 6, October-2021, ISSN 2230-7540

कबीर दासी में समाज की धार्मिक स्थिति और उसकी अभिव्यक्तियों के बारे में अध्ययन

Lalithamma M.[1]* Dr. Okendra[2]

[1] Research Scholar, Arunodaya University, Itanagar, Arunachal Pradesh

[2] Research Guide, Arunodaya University, Itanagar, Arunachal Pradesh

सार – *संत कबीर दास को उत्तरी भारत में भक्ति और सूफी आंदोलन का सबसे प्रभावशाली और सबसे उल्लेखनीय कवि माना जाता है। वह पाखंड की प्रथा के सख्त खिलाफ थे और लोगों को दोहरा मापदंड बनाए रखना पसंद नहीं करते थे। उन्होंने हमेशा लोगों को अन्य जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होने और सच्चे प्रेम का अभ्यास करने का उपदेश दिया। उन्होंने हमेशा मोक्ष के साधन के रूप में कर्मकांड और तपस्वी विधियों का विरोध किया। उन्होंने सभी संप्रदायों की खुले तौर पर आलोचना की और मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर अपने सीधे आगे के दृष्टिकोण के साथ भारतीय दर्शन को एक नई दिशा दी। उन्होंने सभी अंधविश्वासों की बेकारता को उजागर किया, हर चीज जिसे अलौकिक कहा जा सकता है और वह सब कुछ जो सिद्धांत रूप में असत्यापित है। गौरतलब है कि कबीर किसी धर्म के खिलाफ नहीं बल्कि धर्म के नाम पर लोगों द्वारा किए जा रहे पाखंड के खिलाफ प्रचार कर रहे थे। इस प्रकार, उन्होंने विभिन्न जातियों और धार्मिक संप्रदायों के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया। यही कारण है कि कबीर को पूरी दुनिया में बहुत सम्मान दिया जाता है। इस लेख में हम कबीर दासी में समाज की धार्मिक स्थिति और उसकी अभिव्यक्तियाँ के बारे में अध्ययन कर रहे हैं.*

मुख्य शब्द – *समाज, धार्मिक स्थिति, अभिव्यक्तियाँ,*

----------X----------

प्रस्तावना

कबीर के आगमन से पूर्व धार्मिक जीवन में धर्म परिवर्तन की प्रवृत्ति प्रबल होती जा रही थी। वेदों के कई प्रतिद्वंद्वी संप्रदायों ने विकसित किया और ब्राह्मणों के खिलाफ विरोध की भावनाओं को जगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस्लाम ने भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की पूरी कोशिश की। ब्राह्मणों के विरोध और इस्लामी दर्शन की समानता की भावना ने मध्यम वर्ग को इस्लाम में धर्मांतरण की ओर अग्रसर किया। मतलबी वर्ग इस्लाम में धर्मांतरण के बाद सुखी और समृद्ध जीवन जीना चाहता था, और परिणामस्वरूप, कई हिंदू इस्लाम में परिवर्तित हो गए। इसका तात्पर्य है कि धार्मिक भावना विकृत और अनिश्चित थी। धार्मिक भावनाएँ परस्पर घृणा पर टिकी थीं।

उन दिनों उत्तर भारत में निम्नलिखित छह धाराएँ बह रही थीं:

1. एक ईश्वर का इस्लामी दर्शन। जिसे राज्य से पूर्ण सहयोग और सहायता प्राप्त हुई।
2. सूफी प्रेमानुयई धारा।
3. नाथों की हठयोग धारा।
4. सहजयोगी निर्गुण पंथ की ज्ञानश्रय धारा।
5. वैष्णव भक्ति की धारा।
6. शैव और शाक्त संप्रदायों के तंत्राचार की धारा।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि कबीर का काल धार्मिक दार्शनिक क्रांतियों का समय था। कुछ 'मायावाद' पढ़ा रहे थे जो मृत्यु के बाद स्वर्गीय आनंद की प्राप्ति की भविष्यवाणी करता था जबकि कुछ 'माया वाद' का विरोध कर रहे थे और 'लोक धर्म' की श्रेष्ठता स्थापित कर रहे थे। इस काल की धार्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए पं. रामचन्द्र शुक्ल अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखते हैं: 'वज्रयणी सिद्ध' और 'नाथ पंथ के योगी' स्वयं और जनता की भलाई को ध्यान में रखे बिना सच्चे

www.ignited.in

कर्तव्यों से लोगों का ध्यान हटाने में लगे हुए थे: 'सच्चा धर्म नीचे तक डूब गया था।'

काल की प्रचलित प्रथा की व्याख्या डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "सच्चे अर्थों में 'राम नामी' में कोई नहीं खोया' डॉ. राम रतन भटनागर ने अपनी कबीर एक में कबीर के जीवन दर्शन की गंभीर व्याख्या प्रस्तुत की है। अध्ययन'। डॉ रामजी लाई सहायक के शब्दों में, तत्कालीन धार्मिक स्थिति की व्याख्या अंततः इस प्रकार की जा सकती है। कबीर के समय में धार्मिक स्थिति ने एक अजीब रूप ले लिया है। सभी पंथ और संप्रदाय झूठी प्रथाओं और झूठे प्रदर्शन से भरे हुए थे। हर कोई इन झूठे शो और कृत्रिमता के जाल में फंस गया था। इन झूठे शो ने सभी को शत्रुतापूर्ण शब्दों में डाल दिया था। असली 'साधना' गायब हो गई थी कबीर धार्मिक जीवन के इस तरह के पतन को देखकर चौंक गए थे। निष्कर्ष यह है कि कृत्रिमता का प्रवेश और इस क्षेत्र में विभिन्न पंथों और वादों ने कबीर को बाहर और बाहर झकझोर दिया। इस क्षेत्र की भयानक स्थिति ने कबीर को सहनीय रूप धारण कर लिया था। कबीर की कविताओं में इस पतित अवस्था के कई ग्राफिक विवरण मिलते हैं:

“सकई वरण इकतरा हवाई सकली पूजी मिलि खानी।

पापी पूजा भजन कारी, भजन मानस पागल दोई।”

हिंदुओं में बहु-देवताओं-पूजा और मूर्ति-पूजा की प्रवृत्ति बढ़ गई थी। मंदिरों के उपासक कृत्रिमता, झूठे प्रदर्शन और पापपूर्ण कृत्यों के शिकार हो गए थे। दिखावटीपन अपने चरम पर पहुंच गया था और परिणामस्वरूप ‘स्नान’, ‘छपा’, तिलक, माला, पोशाक आदि साधु और संतों के प्रतीक बन गए। इतने सारे दुष्टों ने साधुओं और संतों की तरह जीने का नाटक किया । आस्था और निष्ठा का स्थान अंध विश्वास और झूठे अभिमान ने ले लिया था। शूद्रों को सामाजिक सद्गुणों से प्रतिबंधित किया गया था। उन्हें न केवल वेदों से दूर रखा गया था, बल्कि मंदिर भी उनके दृष्टिकोण से परे थे। उनके पास अलग-अलग कुएं और सेक्टर थे। इसलिए अछूतों को इस्लाम में परिवर्तित किया जा रहा था। मतलबी वर्गों के हिंदुओं के लिए, ऐसा धर्म मांग में था जो उन्हें सामाजिक सम्मान और सम्मान के साथ जीने में सक्षम बना सके। बौद्ध धर्म वास्तव में उनके लिए आकर्षण का केंद्र था, लेकिन वैदिक धर्म की उदारता एक बड़ी बाधा थी। नाथ पंथ जैसे संप्रदायों ने लोगों का ध्यान एक नई दिशा की ओर मोड़ा जहाँ जातियों का कोई भेद नहीं था, वे भी मौजूद थे। इस तरह के संप्रदायों ने ट्रोडेन खंड को आकर्षित किया। तो नाथ पंथ को समाज के निम्न वर्ग के प्रति बहुत आकर्षण था, लेकिन यह लोगों को दिल और दिमाग के बीच के सामंजस्य से संतुष्ट करने में विफल रहा। इसलिए, यह एक नया लेकिन आसान धर्म है जो मांग में था। उन दिनों इस्लाम में भी कृत्रिमता और अंधविश्वास का बोलबाला था। विभिन्न प्रथाओं जैसे 'रोजा' और 'नमाज' में धर्म शामिल था, और तथाकथित धार्मिक उपदेशक और शासक एक शानदार जीवन व्यतीत कर रहे थे।

कबीर ने दोनों धर्मों की बुराइयों को बारीकी से देखा और 'निर्गुण उपासना' के एक नए पंथ की स्थापना की। उनका जन्म भी इसी के लिए उपयुक्त था। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार - संयोगवश वे विभिन्न युगों के मध्यकाल में खड़े हो गए, जिसे उपयुक्त रूप से विभिन्न धार्मिक पंथों और मानसिकताओं का मिलन बिंदु कहा जा सकता है, और सौभाग्य से, उन्हें एक अनुकूल अवसर मिला।

अलग-अलग संस्कारों के सभी रास्ते उसके लिए बंद थे। एक मुस्लिम परिवार में पले-बढ़े वह मुसलमान नहीं थे। हिंदू माता-पिता से पैदा हुए वे हिंदू नहीं थे। साधु की तरह रहते हुए वह साधु नहीं थे (पारिवारिक जीवन को कभी नहीं त्यागा) कबीर दास एक ऐसे मिलन बिंदु पर खड़े थे जहां हिंदू धर्म और इस्लाम एक साथ मिलते थे, जहां ज्ञान और अज्ञान एक साथ मिलते थे, जहां योग पंथ और भक्ति पंथ एक साथ मिलते थे, और जहां निर्गुण भक्ति पंथ और सगुण भक्ति एक साथ मिलते थे। वे उस मिलन बिंदु पर खड़े थे। .वह दोनों पक्षों को देख सकता था और दोनों पक्षों के अच्छे और बुरे का बारीकी से निरीक्षण कर सकता था। इस प्रकार कबीर ने सभी दोषों के गुण और दोषों की जांच इस तरह से की जैसे लोगों की आंखें खुल गईं। इस तरह, का नया पंथ कबीर द्वारा स्थापित 'प्रेमभक्ति' अस्तित्व में आई।

कबीर ने कभी भी काल के किसी भी धर्म को अपना धर्म नहीं माना। उनका उन धर्मों में कोई विश्वास नहीं था जिनके आदर्शों और मूल्यों की उन्होंने घोर आलोचना की। यह उन पर प्रशंसनीय टिप्पणियों के अभाव से सिद्ध होता है। उन्होंने भक्ति का सम्मान करते हुए इसे अपना धर्म घोषित कर दिया। उन्होंने दूसरे धर्मों से कुछ चीजें उधार लेकर अपने पंथ को मजबूत किया। उन्होंने बौद्ध धर्म, शैव, नाथ पंथ, वज्रयान और सहजन में मौजूद कुछ अच्छी प्रथाओं और भक्ति के तरीकों को एक नए रूप में स्वीकार किया। किसी को भी इस तरह के नतीजों का शिकार नहीं होना चाहिए, यह सोचकर कि कबीर के पास अपने मूल रूप में कई पंथों और धर्मों की भक्ति के तरीके और तरीके हैं। उन्होंने उन्हें शुद्ध रूप में स्वीकार किया।

धर्म के विकृत रूप ने सबसे अधिक कबीर का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने अपना अधिकांश समय धर्मों की विकृतियों की तीखी आलोचना में बिताया। कबीर की दृष्टि में उनके काल का कोई भी धर्म दोष रहित नहीं था। बुरे आचरण, दुष्ट रीति-

www.ignited.in

रिवाजों, पापपूर्ण कृत्यों, अंधविश्वासों, बनावटीपनों और झूठे दिखावे ने मनुष्य के सच्चे धर्म को गहरा आघात पहुँचाया था। कबीर को झूठी परंपराओं में कोई मतलब नहीं दिख रहा था। कृत्रिम कपड़े, तीर्थयात्रा और उपवास। उनके लिए, धर्म का वास्तविक स्वरूप झूठे दिखावे से काफी मुक्त था। कबीर ने अपनी घोषणा में जोर देकर कहा कि सच्चा धर्म संकीर्णता से मुक्त है, और समानता, सत्य और अहिंसा पर आधारित है। इस कसौटी पर परखा हुआ 'संता धर्म' ही सच्चा 'अस्तिक्य' सिद्ध होता है और 'प्रेम' ही इसे दीप्तिमान महिमा दे सकता है। महात्मा कबीर एक ऐसे महान व्यक्तित्व थे जिन्होंने ज्ञान के तेज धूप से अंधेरी दुनिया को रोशन कर मानवता को राह दिखाई।

कबीर के समय में 'सनातन धर्म' के रीति-रिवाज और तरीके अस्तित्व में थे। सनातन ने कभी भी अपना व्यावहारिक स्वरूप बनाए रखा था, जिसके कारण हिंदू अनुयायी खुद को धार्मिक प्रथाओं में व्यस्त रखते थे, जिसमें आमतौर पर शास्त्रों को पढ़ना और अन्य 1 कर्मकांड शामिल थे। लेकिन इनका असली मकसद वहां से नदारद था। इसलिए, उनके पालन में झूठे दिखावे के अलावा कुछ नहीं था। यहीं पर ब्राह्मणों ने, जिन्हें शास्त्रों में पारंगत माना जाता था, अपने शिष्यों को धोखा दिया, जो ज्यादातर अज्ञानी और अनपढ़ थे। कबीर ने उन्हें बारीकी से देखा और लोगों को वास्तविकता का खुलासा किया। कबीर ने पापी कृत्यों में शामिल धर्म के तथाकथित एजेंटों पर गंभीर हमला किया और उन्हें डांटा।

इस काल में हिंदू धर्म विभिन्न संप्रदायों और पंथों का संगम था। जब बौद्ध धर्म नीचे की ओर प्रवृति दिखा रहा था, तो वह झूठे दिखावे से भरा हुआ था, इसका प्रभाव 'सनातन धर्म' पर बढ़ते हुए असत्य और कृत्रिमता में पड़ा। इसके मुख्य एजेंट पंडितों और ब्राह्मणों ने इसे अभ्यास के आधार पर मजबूत करने की कोशिश की, लेकिन इसके पतन को रोका नहीं जा सका। सामाजिक व्यवहार में झूठे दिखावे बढ़े। कृत्रिमता के उद्भव के कारण कर्तव्य और अभ्यास का वास्तविक आकार शून्य हो गया, और फलस्वरूप हिंदुओं में विभिन्न संप्रदाय और पंथ उभर आए। अनुयायी शैव पंथ, शाक्त पंथ, नाथ पंथ, बौद्ध धर्म, वैष्णव पंथ आदि में विभाजित थे। उनमें से लगभग सभी अश्लील जीवन के आदी थे, वे मांस खाने वाले और भद्दे थे और शराब पीते थे, और वे सभी अपनी खोज में खो गए थे। बिना किसी परवाह के।

गहन अध्ययन के बाद कबीर ने उन्हें दूर करने का प्रयास किया। कबीर पं. से पहले भी। रामानन्द ने भी ऐसा ही करने का प्रयास किया, लेकिन बहुत कम सफलता के साथ, और उस लक्ष्य को पाने में असफल रहे जो कबीर ने बाद में प्राप्त किया। मानव इतिहास में अभी तक कोई भी महान व्यक्तित्व वांछित सफलता प्राप्त नहीं कर पाया है, लेकिन कबीर अपवाद हैं। निःसंदेह आधुनिक युग में यह श्रेय महात्मा गांधी को दिया जा सकता है, फिर भी वे कबीर के समान नहीं हैं और अंत में उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

कबीर सभी सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए सत्य से लैस थे। वह अच्छे आचरण, साहस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्र अभिव्यक्ति से भी लैस थे। ऐसे अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार को सहने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता था सिवाय पथ से भागने के, कबीर ऐसे सुधारक थे जिन्होंने समय रहते लोगों को आगाह किया और समाज को अच्छे रास्ते पर ले गए। उन्होंने न केवल कुचली हुई मानवता को सांत्वना दी, बल्कि मार्गदर्शन भी किया और भूले-बिसरे रास्ते पर चल पड़े, 'कबीर एक वफादार मानवतावादी थे। वह रूढ़िवादी रवैये से काफी मुक्त था, हालांकि इस्लाम में उसकी कुछ आस्था थी। उनका अंध विश्वास और अंधविश्वास से कोई संबंध नहीं था। कबीर हृदय की पवित्रता में विश्वास करते थे। वह अनुभव और सच्चाई को तौल कर ही चीजों को स्वीकार करते थे और जीवन में बलिदान उनका आदर्श वाक्य था। 1 कबीर ने अन्य धर्मों की बुराइयों और भक्ति और पूजा के तरीकों का बारीकी से अवलोकन किया और उनके झूठे हुड का खुलासा किया। उन्होंने लोगों को चेतावनी देते हुए कहा कि जो लोग अश्लीलता में खोए हुए हैं, वे कैसे बचा सकते हैं और लोगों को सावधान कर सकते हैं?

कबीर के युग में मुस्लिम शासकों ने देश पर शासन किया और हिंदुओं पर शासन किया। मुसलमानों को धन की कमी नहीं थी। इसलिए वे अश्लीलता के गहरे समुद्र में डूब गए। हिंदुओं ने अपने गौरवशाली दिन खो दिए थे। वे असहाय थे, लेकिन फिर भी उन्हें किसी भी तरह अपने धार्मिक जीवन को बचाना था। तो उनके विश्वास में एक तरह की कठोरता आ गई। इसलिए वे अपने समाज के एक बड़े हिस्से से चूक गए; और कृत्रिमता के प्यार के कारण दिशा का नुकसान हुआ, धार्मिक संस्कारों के बीच, लोगों के बीच रोजा की व्यापक मुद्रा थी, और साथ ही इस्लाम के एजेंटों को अपनी पसंद का कोई भी काम करने की पूरी आजादी थी। मुस्लिम धार्मिक एजेंट भी अमीर थे। 'इसलिए वे फैशन से रहते थे। बाहरी रूप से वे आध्यात्मिक ध्यान का जीवन जीते थे, लेकिन वे पूरी तरह से भौतिक विलासिता में डूबे हुए थे। वे अपने निर्दोष लोगों को अंधेरे में रखते थे, और हमेशा हिंदुओं के साथ संघर्ष में शामिल रहते थे। मुस्लिम धार्मिक एजेंटों के कृत्यों ने ही सांप्रदायिक कट्टरता को जीवन में उतारा, जिससे हिंदुओं के प्रति ईर्ष्या की भावना पैदा हुई।

धर्म के मुस्लिम एजेंटों में मनुष्य के प्रति दया और सहानुभूति की बहुत कमी थी। कबीर अहिंसा के संत थे। वह इसे तोड़ नहीं

सका। इसलिए उन्होंने उनके रोजा, नमाज और अन्य धार्मिक संस्कारों की तीखी आलोचना की

"मस्जिदा भितरा मुल्ला पुकाराई,

क्या साहिब तेरा बहिरा है।"

उन्होंने मस्जिदों और नमाज़ की व्यर्थता को भी कुछ इस तरह साबित किया:-

"दिन भरा रोजा धरता हो,

रात हनत हो गया।"

जो रोजा की बेकारी भी साबित करता है', वह मुस्लिम पीरा-ओलिया पर कुछ इस तरह हंसा-

"मुसलमानों के पीरा औलिया,

मुरागी मुरागा खाई।"

और

"बकारी मुरागी किना फरमाया,

किसके हुकुम टर्न छुरी चलाया।"

यहां उन्होंने पशु वध में भी दोष पाया। उन्होंने उन लोगों को गंभीर ताना मारा, जिन्होंने सोचा था कि मस्जिद ईश्वर का निवास स्थान है -

"जोरे खुदा मसाला बसती है,

औवरा मुलुका केरा।"

और ईश्वर की सर्वव्यापकता को सिद्ध किया। सुन्नत पर हंसते हुए उन्होंने कहा-

"हां तो तुरका किया करी सुन्नति औ

लेखन का कहिया।"

और उसने धार्मिक एजेंटों पर भी गंभीर हमला किया-

"काजी कौन करता है बखाने।"

धर्म का कोई भी झूठा और कृत्रिम एजेंट उनकी कटु आलोचना से बाहर नहीं था। चाहे वो हिंदू हो या मुसलमान। उनके ताने कड़वे, तीखे और आहत करने वाले हैं, लेकिन काफी सार्थक और प्रभावशाली हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस कवि-संत के हृदय में सहानुभूति और दया है और वाणी में सच्चाई है।

कबीर एक सच्चे समाज सुधारक थे जिन्होंने हिंदू और इस्लाम दोनों धर्मों की अच्छाई और बुराई को देखा और उन्होंने न केवल आलोचना की, बल्कि उनके लाभ के लिए अनुसरण करने का मार्ग भी दिखाया। कोई भी उसके लिए पराया नहीं था वह दोनों के साथ अपने जैसा व्यवहार करता था। इसलिए, उन्होंने दोनों की आलोचना की समान भावना दिखाई। वह हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे, और उन्होंने किसी भी पंथ का सख्ती से पालन नहीं किया और स्वतंत्र रूप से प्रचार किया। इसलिए कबीर ने जो कुछ भी कहा है वह निष्पक्ष और अनर्गल है। पंक्ति के माध्यम से-

"अरे इना दो रहा न पाई"

उन्होंने दोनों को जो गलत रास्ते पर थे, सही रास्ते पर लाने की कोशिश की, जो सभी के लिए फायदेमंद और मददगार था।

कबीर दोनों समुदायों को गलत रास्ते पर देखकर दुखी हुए।-

"मन न रंगये जोगी कपारा।"

अपने समय के लोगों के सामने अपनी जघन्य साजिश का खुलासा करने के लिए प्रच्छन्न साधुओं के बारे में उनका कहना था। कबीर को भी ऊंच-नीच का भेद और छुआछूत का भेद पसंद नहीं था। इसलिए उन्होंने समानता लाने की कोशिश की, और जातियों को जन्म के अधिकार के रूप में नहीं माना। उन्होंने सिद्धांत की स्थापना की-

"तो हिंदू मुसलमान जकार दुरुस रहे ईमान।"

उन्होंने उन लोगों के साथ व्यवहार किया जिन्होंने इस आदर्श वाक्य का पालन किया, न कि एक इंसान के रूप में। काली भेड़ और दुष्टों का विरोध करना कोई आसान काम नहीं है। केवल महान व्यक्ति ही उनका खुलकर विरोध करते हैं और बिना किसी डर के उन पर गंभीर हमला करते हैं।

कबीर एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने खुले तौर पर बुरे तत्वों का विरोध ऐसे समय में किया जब हर शरीर कुचला गया और आवाज उठाने की हिम्मत नहीं हुई। इस प्रकार उन्होंने पीड़ित मानवता को बचाया। उन्हें पूजा और शास्त्रों में कोई अर्थ नहीं मिला। उन्होंने सोचा कि केवल निर्दोष और शुद्ध हृदय की पूजा से ही ईश्वर की निकटता प्राप्त हो सकती है।

www.ignited.in

उन्होंने कहा कि हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता स्थापित करने और दोनों समुदायों को बिना किसी जाति और पंथ के भेद के सच्ची मानवता से परिचित कराने के लिए

"भुला मणि पराई जिनी कोई,

हिंदू तुरुका झूठा कुल दोई।"

कबीर एक उच्च वर्ग के सुधारक और धार्मिक उपदेशक थे, उन्होंने अव्यवस्थित समाज में व्यवस्था लाने का प्रयास किया। उन्होंने समाज में असमानता और समानता को दूर करने की पूरी कोशिश की। बिना सच्चे आध्यात्मिक 'गुरु' के ऐसा कौन कह सकता है-

"हिंदू तुरका येका रहा है।"

और इसकी सच्चाई को कौन समझ सकता है? कबीर ने सभी के लिए एक आसान और लाभकारी मार्ग खोजा, जहाँ मनुष्य मनुष्य से परिपूर्ण मानवीय भावनाओं से मिल सके। इसलिए उन्होंने साथी भावना, क्षमा, सेवा की भावना और अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार करते हुए आचरण की शुद्धता पर जोर दिया। कबीर एक आदर्श चिकित्सक थे जिन्होंने समाज की बीमारी का निदान किया और उसे ठीक करने के लिए एक उपयुक्त दवा निर्धारित की, हालांकि रोगी को सौंदर्य ऑपरेशन की आवश्यकता थी। लेकिन कबीर अपने प्रयास में सफल रहे। उसे कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई। "कबीर की वाणी ने सामाजिक जीवन में एक और महान कार्य किया, वह है सादगी और आचरण की पवित्रता का प्रचार।" कबीर के युग में समाज अश्लीलता के दलदल में फंस गया था, जिसका उन्होंने बहादुरी और स्वतंत्र रूप से सामना और विरोध किया और उन्हें करना पड़ा। नारी लोक का ह्रास, उन्हें ब्रह्मचर्य का उपदेश देना था। उन्होंने समाज में जीवन की पवित्रता का नेतृत्व करने की प्रवृत्ति का प्रचार करने के लिए कड़ी मेहनत की। वे क्रोध, लोभ, हिंसा और छल के काफी खिलाफ थे। कबीर के समाज सुधार का उद्देश्य था जीवन की सादगी, हृदय की मासूमियत और मन की पवित्रता का आदर्श वाक्य।

कबीर ने कभी भी बेकार विचारों का समर्थन नहीं किया, चाहे वह किसी प्रसिद्ध आचार्य द्वारा या पैगंबर या वेदों और शास्त्रों द्वारा शुरू किया गया हो। कबीर को कृत्रिम दिखावे#अर्थहीन पूजा और बेतुके संस्कारों की गुलामी पसंद नहीं थी। इसलिए उन्होंने कभी भी अपनी योग्यता स्थापित करने की कोशिश नहीं की। वह मानव जाति के लिए प्रेम और भक्ति के समर्थक थे। वह जाति की श्रेष्ठता और जन्म के कुलीनता को कोई मूल्य नहीं देते थे, लेकिन वे मानवता के बहुत बड़े भक्त थे। हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता लाने के लिए उन्होंने किसी भी प्रकार के जाति भेद की अनुमति नहीं दी, न ही उन्होंने खुदा और भगवान के बीच कोई अंतर पाया, राम-रहीम और केशव-करीम केवल एक एकीकृत इकाई हैं और यह तथ्य पुरुषों द्वारा नहीं समझा जाता है दूषित मस्तिष्क का। इस एकता पर कबीर से ज्यादा जोर किसी और ने नहीं दिया।

कबीर ने धार्मिक संघर्षों को कभी इस बात को ध्यान में रखकर नहीं देखा। उन्होंने बीमारी का सही निदान किया या नहीं, यह विवाद का विषय हो सकता है, लेकिन दवा के नुस्खे और रोकथाम में कोई गलती नहीं थी:

"यह औषधि है, भगवद विश्वास"

कबीर की इन दोनों बातों में कोई गलती नहीं है, और अगर कभी हिंदू और मुसलमान के बीच एकता आती है, तो वह इसी रास्ते से आती है।

कबीर ने जो कुछ भी कहा, वह मानवता की मांग थी। इसमें किसी भी धर्म, जाति या वर्ग के प्रति द्वेष नहीं है। कबीर ने सुगम मार्ग को मानव धर्म का सर्वोत्तम और साध्य मार्ग बताया। जो लोग इस मार्ग का अनुसरण करते हैं, उन्हें मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। सहज मार्ग एक ऐसा रास्ता है जो मानवता को विशेष महत्व देता है, और भक्ति के कठिन तरीकों और कृत्रिम प्रदर्शनों के लिए कोई जगह नहीं देता है। इसके परिणामस्वरूप बिना किसी रुकावट के पूरी मानव जाति को कबीर की शिक्षाओं के करीब लाया गया। उनकी आवाज में अद्वितीय आकर्षण है और इसकी धुन मध्यकाल के लोगों के कानों में गूंज रही थी। कबीर ने कभी कोई नया पंथ शुरू नहीं किया। लेकिन उन्होंने उन पंथों और रास्तों की वैधता को सही ठहराने की कोशिश की, जिन्हें उन्होंने मानव जाति के लिए उपयोगी और मददगार समझा। कबीर ने मध्ययुगीन काल में अज्ञानता के घने अंधेरे में टटोलते हुए मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए 'यमन की सेवा की। यह उनकी प्रेरक आवाज थी जिसने तत्कालीन धार्मिक झूठ और सामाजिक कुरीतियों को विलुप्त कर दिया और आम को जीवन की सादगी और पवित्रता का पाठ मिला। अच्छा आचरण और आपसी एकता।कबीर को सर्वोच्च कोटि का समाज सुधारक कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

यह कहना गलत नहीं है कि कबीर समाज की उपज थे। किसी विशेष व्यक्ति के विकास में सामाजिक परिस्थितियों द्वारा प्रमुख भूमिका निभाई जाती है। तत्कालीन सामाजिक स्थिति ने कबीर को महापुरुष बना दिया। समाज कबीर का मुख्य शिक्षक और प्रेरक था। समाज ने कबीर को धर्म और दर्शन के सूक्ष्म अध्ययन की ओर अग्रसर किया। यह बिल्कुल सत्य है

कि कबीर विद्वान विद्वान नहीं थे, लेकिन उन्होंने दार्शनिक दृष्टिकोण की जटिल समस्याओं और बुरी प्रथाओं की कठोरता को ध्यान से देखा। मक्का के विभिन्न पंथों और दार्शनिक निष्कर्षों में समाज भ्रमित था। आम आदमी दार्शनिक जटिलता का सामना करने के लिए तैयार नहीं था। यह सोचना गलत है कि समाज को दार्शनिक विचारों के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन इसके लिए एक आसान पंथ के मार्गदर्शन की बहुत आवश्यकता थी जिसमें किसी भी प्रकार का कोई भेद नहीं था। कबीर की प्रतिभा ने इस मांग को पूरा किया। क्या दार्शनिक परंपरा का कोई स्थान नहीं है? विचारणीय प्रश्न है।

जैसे कबीर ने अज़ान को अज्ञान की संतान माना है, वैसे ही उन्होंने 'व्रत', रोज़ा, तीर्थ यज्ञोपवीत आदि को भ्रांति का स्रोत कहा। घूंघट (घुघाट) के फैशन की भी कड़ी आलोचना की गई है- "रू रह री बहुरिया घुंघट जिनी करहाई। "कबीर 'घुघट' के लिए अपनी नापसंदगी दिखाते हैं। घुघट स्त्री का भेष हो सकता है, लेकिन उसकी पवित्रता का प्रतीक नहीं हो सकता। तो कबीर कहते हैं, "घुघट करना सती न होई" कबीर ने अज्ञान के कारण होने वाली सभी प्रकार की कुरीतियों या प्रथाओं की आलोचना की है।

संत कबीर एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने मध्यकाल के घोर अंधकार को ज्ञान के सूर्य से प्रकाशित किया और लोगों को सही मार्ग खोजने के लिए निर्देशित किया।

कबीर का युग संघर्षों और संघर्षों से भरा था। उन दिनों दो प्रमुख समुदाय हिंदू और मुस्लिम उत्तर भारत में रह रहे थे। वे दोनों अपने रहन-सहन के तरीकों में, धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों में और तरीकों या पूजा और भक्ति में भी रूढ़िवादी थे। नतीजतन, दोनों समुदाय लगातार संघर्ष में शामिल थे, दोनों ने एक-दूसरे के प्रति द्वेष और शत्रुता पैदा की। उन्होंने कभी समझौता करने की कोशिश नहीं की, क्योंकि आपसी दुश्मनी बेहतर लगती थी।

उस युग में भारतीय समाज बुराइयों से भरा हुआ था। हिंदू और मुसलमान दोनों ही कृत्रिमता के शिकार हो गए थे। उन कृत्रिमताओं को मिटाने के लिए कबीर जी उठे। दो विरोधी समुदायों और सबसे खराब राजनीतिक स्थिति के कारण संगठित समाज अव्यवस्था की स्थिति में पहुंच गया था। शत्रु शासकों की तलवारें हिन्दुओं के खून की प्यासी थीं। हिंदू निराशा के गहरे समुद्र में डूब गए, लेकिन राष्ट्र और धर्म के प्रति उनका प्रेम बढ़ता ही गया।

उस युग में हिंदू धर्म और इस्लाम दो प्रमुख धर्म थे। दोनों धर्मों के एजेंटों ने अपनी जनता को कृत्रिम दिखावे और झूठे प्रदर्शनों के जाल में फंसाने की कोशिश की, और अपनी-अपनी श्रेष्ठता स्थापित करते हुए वे दुश्मनी फैलाते थे जिसके कारण दोनों में बार-बार झड़पें होती थीं। इससे सामाजिक और धार्मिक जीवन में अव्यवस्था फैल गई।

इतने कठिन युग में कबीर का जन्म हुआ और उन्होंने अपने युग की कृत्रिमता, स्थापित रीति-रिवाजों और धार्मिक झूठों को ध्यान से देखते हुए उन्हें उखाड़ फेंकने का अथक प्रयास किया। कबीर से पहले पं. रामानंद जिन्होंने इस महान कार्य की जिम्मेदारी ली, लेकिन वे उतने सफल नहीं हुए, जितने उनके शिष्य कबीर ने किए। मानव इतिहास में अभी तक किसी भी महापुरुष ने वांछित सफलता प्राप्त नहीं की है। लेकिन कबीर इसके अपवाद हैं।

समाज के बुरे तत्वों को दूर करने के लिए उनके पास सत्य का शस्त्र और अच्छे आचरण की शक्ति थी, और उनकी कटु ताने की तलवार भी बहुत प्रभावशाली थी। घायल के पास भागने के अलावा और कुछ नहीं था। कबीर एक ऐसे महान सुधारक थे जिन्होंने लोगों को सावधान किया, उनकी बुराइयों को उजागर किया और उन्हें एक सही रास्ते पर लाया जो अधिक लाभकारी सहायक था। उन्होंने न केवल उन्हें सांत्वना दी, बल्कि भूला हुआ रास्ता भी दिखाया। कबीर मानवतावादी दृष्टिकोण के व्यक्ति थे। वह रूढ़िवादी विचारों के बिना था, हालांकि इस्लाम उसका स्वीकृत धर्म था। उनका किसी भी स्थापित रिवाज या अंधविश्वास से कोई संबंध नहीं था। वह उसे स्वीकार करते थे जो उनके तर्क संकाय को सबसे अधिक आकर्षित करता था। अपने अनुभव के संतुलन को तौलते हुए और सत्य की खोज करते हुए वह किसी चीज को स्वीकार या अस्वीकार कर सकता था।

उपसंहार

कबीर हमारे सामने एक क्रांतिकारी नेता के रूप में आते हैं जो समाज के सामान्य ढांचे में बदलाव चाहते थे, क्योंकि हिंदू और मुस्लिम समुदाय लगातार संघर्ष में शामिल थे। वे दोनों कुप्रथाओं और अंधविश्वास के शिकार हो चुके थे। कबीर हिंदुओं और मुसलमानों की तत्कालीन स्थिति को देखकर अप्रसन्न थे। वह दोनों समुदायों के बुराइयों के दलदल में फंसने से पहले धर्म का एक नया रूप लाना चाहता था। कबीर को यह बर्दाश्त नहीं था। उन्हें धर्म का वास्तविक स्वरूप पसंद था जिसे वे मानव समाज के सामने रखना चाहते थे। वह समाज में शांति और प्रेम के समर्थक थे। वह मनुष्य को एक ऐसा मार्ग दिखाना चाहता था, जो अधिक उपयोगी हो। उनका दृढ़ विश्वास था कि दोनों समुदाय धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूल गए हैं। कबीर का ताना झुंझलाहट का नहीं, बल्कि प्रेम पर आधारित था। कबीर एक महान व्यक्ति थे जिन्होंने अपने दिल में कोई दोष नहीं आने दिया। वे सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन

www.ignited.in

चाहते थे। उन्होंने हमेशा समाज की प्रगति की कामना की। उन्होंने अपने पूरे जीवन में कृत्रिमता को दूर रखने की कोशिश की। उनका काम अनूठा था। जहां उनके काम को लोगों का साथ मिले या नहीं, उन्होंने इसकी परवाह कम ही की। उन्होंने अपने पूरे जीवन में अपनी मर्जी से किया। यही उनकी विशेषता थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दासगुप्ता, सो आई.टी. "प्रारंभिक विष्णुवाद और नारायणिया पूजा", भारतीय ऐतिहासिक तिमाही 1931 और 32. भारतीय दर्शन का इतिहास, 5 खंड,, यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज 1922-55।

2. दिनांक, वी.एच. वेदांत समझाया, बुकसेलर्स पब्लिशिंग कंपनी, बॉम्बे 1932-1-।

3. डी, सुशील कुमार, बंगाल में वैष्णव आस्था और आंदोलन का प्रारंभिक इतिहास, कलकत्ता 192+2 डेसकार्टेस, रेने, द डिस्कोर्स ऑन मेथड एंड मेटा फिजिकल मेडिटेशन, गर्ट्रूड बर्फोर्ड रॉलिंग्स द्वारा अनुवादित, वाल्टर स्कॉट, लंदन 1901।

4. डॉव, अलेक्जेंडर, द हिस्ट्री ऑफ हिंदोस्तान, लंदन

5. एमजी ई आर टन, एफ। एहगवाद-क्रिटा, अनुवादित और व्याख्या की गई। कैम्ब्रिज, मास।, 196।

6. एलफिंस्टन, माउंटस्टुअर्ट, द हिस्ट्री ऑफ इंडिया, 2 खंड, जॉन मरे, लंदन 1821

7. एर्मर, हर्बर्ट एच. रहस्योद्घाटन और धर्म, निशेत एंड कंपनी लंदन 1954

8. घुर्ये, जी.एस, भारतीय साधु, डॉ. एल.एन. चपेकर, द पॉपुलर बुक डिपो, बॉम्बे 1953

9. गरबे, आर. हगवाद-गीता", ईआरई, खंड II, 1909

10. हेगेल, जी. डब्ल्यू.एफ. अनुवादित और संपादित हाई ई.बी. स्पीयर, अंग्रेजी और दार्शनिक पुस्तकालय, 1877

11. फॉर्मिशी, कार्लो, "भारतीय धार्मिक विकास में गतिशील तत्व", विस्फा भारत टी तिमाही 1926-27, धर्म का दर्शन।

Corresponding Author

Lalithamma M.*

Research Scholar, Arunodaya University, Itanagar, Arunachal Pradesh

lalithathimmanajaaih626@gmail.com